Volume 12, Issue II, March 2023, ISSN: 2277-1255
BHARTIYAM INTERNATIONAL JOURNAL OF EDUCATION & RESEARCH
A quarterly peer reviewed International Journal of Research & Education

वाणिज्य शास्त्र के शिक्षण-अधिगम में अनुदेशनात्मक सामग्री का प्रयोग

***सारिका**

प्रस्तावना

वाणिज्य एक व्यापक शब्द है। वे सभी क्रियाएँ जिनका सम्बन्ध वस्तुओं के उत्पादन के स्थान से उपयोग के स्थान पर पहुँचाने का होता है इसमें सम्मिलित की जाती हैं। वाणिज्य उन सभी क्रियाओं का योग है जो व्यक्ति बाधा (व्यापार द्वारा स्थान बाधा (परिवहन द्वारा हानि के जोखिम की बाधा (बीमा कंपनियों द्वारा), समय बाधा (भण्डारण गृह द्वारा और वित्तिय बाधा (बैकिंग द्वारा को दूर करने के सम्बन्ध में की जाती हैं।

वाणिज्य शास्त्र के शिक्षण को रूचिकर व प्रभावशाली बनाए रखने के लिए विशिष्ट अनुदेशनात्मक सामग्री की आवश्यकता होती है। शिक्षण-प्रक्रिया के पूर्व निर्धारित उद्देश्यों की अधिकतम संप्राप्ति तथा विद्यार्थियों में वांछित व्यवहार परिवर्तन करने के लिए यह आवश्यक है कि शिक्षक व विद्यार्थी की अधिक से अधिक अन्तः क्रिया हो, जिसके लिए अनुदेशनात्मक सामग्री एक महत्वपूर्ण औजार का काम करती है। वाणिज्य शास्त्र के विस्तृत विषय को समझने के लिए यह आवश्यक है कि अध्यापक विद्यार्थी की सहायता करें जिससे बालक इस प्रकार की विशिष्ट अनुदेशनात्मक सामग्री का प्रयोग कर सके जो तथ्यों को सही रूप में स्पष्ट व उजागर कर सके ।

शिक्षण-अधिगम

शिक्षण-अधिगम एक ऐसी प्रक्रिया है जिसमें सीखने वाला विभिन्न तरीकों से अपने लक्ष्यों की ओर बढ़ते हुए नया ज्ञान, आचार और कौशल को समाहित करता है, ताकि उसके सीखने के अनुभवों में विस्तार हो सके। शिक्षण व अधिगम एक दूसरे पर आधारित एक विशेष प्रक्रिया के रूप में परिभाषित की जा सकती है क्योंकि शिक्षण प्रक्रिया अधिगम हेतु प्रेरणा, पथ-प्रदर्शन व प्रोत्साहन का कार्य करती है। शिक्षण प्रक्रिया को मानव

* Assistant Professor, M.D. College of Education, Bahadurgarh,

व्यवहार में परिवर्तन करने की एक तकनीक के रूप में समझा जा सकता है। जिससे व्यक्ति अपना ज्ञानात्मक व रचनात्मक शिक्षण करता है।

अनुदेशनात्मक सामग्री

अनुदेशनात्मक सामग्री में वे सभी वस्तुएँ व उपकरण शामिल हैं जो सभी संप्रत्ययों व विचारों को स्पष्ट करने और उनके अन्तः सम्बन्ध के द्वारा उनमें समन्वय स्थापित करने में अध्यापक की सहायता करती है।

अध्यापक जिन-जिन वस्तुओं से छात्रों को निर्देश देता है उन सभी को अनुदेशनात्मक सामग्री के अन्तर्गत शामिल किया जा सकता है। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए निर्देशन के द्वारा बालक में निहित योग्यताओं व क्षमताओं की जानकारी प्राप्त की जाती है, जिसके आधार पर ही बालक अपने विकास की प्रक्रिया, उपलब्ध अवसरों तथा समाज की विभिन्न परिस्थितियों को पहचानना सीखता है।

वाणिज्य विषय के शिक्षण-अधिगम में अनुदेशनात्मक सामग्री की आवश्यकता विद्यार्थियों में पाठ्य वस्तु का स्पष्टीकरण करने, उन्हें उत्प्रेरित करने व विद्यार्थियों के वैज्ञानिक दृष्टिकोण का विकास करने के लिए की जाती है। यह सामग्री वाणिज्य

विषय के संप्रत्ययों को स्पष्ट करने के लिए प्रत्यक्ष, प्रतिनिधि तथा अर्थपूर्ण अनुभव प्रदान करती है। विद्यार्थियों की ज्ञानइन्द्रियों का अधिकतम उपयोग करने, उच्च आन्तरिक शक्तियों का विकास करने व वांछनीय व्यवहारिक उपलब्धियों को प्राप्त करने में यह विशेष रूप में सहायक है।

वाणिज्य विषय के लिए प्रयोग की जाने वाली अनुदेशनात्मक सामग्री बालकों के समय व ऊर्जा की बचत करते हुए कक्षाकक्ष अन्तः क्रिया को प्रोत्साहित करती है। विषय सम्बन्धी यह सामग्री शिक्षण के सूत्रों पर आधारित होती है जो विद्यार्थियों को नवीन अनुभव प्रदान करने में सहायक होती है। वाणिज्य विषय की

* Assistant Professor, M.D. College of Education, Bahadurgarh,

अनुदेशनात्मक सामग्री का सन्तुलित, तर्क - युक्त तथा वैज्ञानिक ढंग से प्रयोग, अभिप्रेरित करने व बालकों की असीमित ऊर्जा के प्रयोग के लिए विभिन्न सृजनात्मक अवसर प्रदान करती है।

वाणिज्य शास्त्र के शिक्षण-अधिगम हेतु कतिपय आवश्यक सामग्री निम्नलिखित हैं

1 बुलेटिन बोर्ड

बुलेटिन बोर्ड विद्यालय की सर्वकालिन पत्रिका है, अतः बुलेटिन बोर्ड को विद्यार्थियों को प्रत्यक्ष जानकारी देने व ज्ञान के प्रति उनकी जिज्ञासा व इच्छा को प्रेरित करना चाहिए। बुलेटिन बोर्ड की समस्त सामग्री विद्यार्थियों के रचनात्मक प्रयासों का परिणाम होनी चाहिए, यद्यपि पथ-प्रदर्शन अध्यापकों का होना चाहिए परन्तु यह कार्य विद्यार्थियों के लिए किया गया विद्यार्थियों का ही होना चाहए। बुलेटिन बोर्ड की महत्वपूर्ण विशेषता यह है कि इसके विषय तत्वों के विन्यास तथा दृष्टान्तों (illustratons) में एक संगति एवं समरसता सदैव रहनी चाहिए ।

2 कम्प्यूटर

कम्प्यूटर वाणिज्य विषय की शिक्षण-अधिगम सामग्री प्रदान करने का सहायक साधन है और शिक्षा का क्षेत्र में आधुनिक तकनीक है। कम्प्यूटर को विद्युत मस्तिष्क भी कहा जाता है। इसीलिए यह एक विद्युत तकनीक है, जिसके अन्तर्गत डिस्क पर सूचनाएं एकत्रित की जाती हैं। विशलेषण किया जाता है और जब आवश्यकता हो उससे सूचनाएं टेप आदि पर प्राप्त की जाती है। कम्प्यूटर के अन्दर विद्यार्थियों को अभिप्रेरित करने, वास्तविक अनुभव प्रदान करने, प्रस्तुत करने की असीम योग्यता होती है। इन सभी विशेषताओं के साथ-साथ कम्प्यूटर की एक कमी है कि वास्तविक कक्षा-कक्ष शिक्षण में अध्यापक अपने व्यवहार एवं विद्यार्थियों के साथ अन्तः क्रिया के द्वारा जिस प्रकार के स्नेहयुक्त एवं भावात्मक वातावरण का निर्माण करता

* Assistant Professor, M.D. College of Education, Bahadurgarh,

है, वह कम्प्यूटर की सहायता से नहीं कर पाता अर्थात यह मनोवैज्ञानिक समस्याओं का समाधान करने में असमर्थ होता है

सारणी / तालिका (

पुनरावृत्ति कराने व नए उदाहरण वाणिज्य विषय के अध्ययन के लिए सबसे महत्वपूर्ण सामग्री तालिका है, क्योंकि वाणिज्य के अध्यापक को आंकडों को प्रदर्शित करने के लिए तालिकाओं के प्रयोग की आवश्यकता होती है। तालिकाओं के द्वारा विभिन्न संप्रत्ययों के अन्तः सम्बन्ध को अधिक से अधिक स्पष्ट किया जाता है। वाणिज्य शास्त्र एक वैज्ञानिक विषय है व इसे इस प्रकार पढ़ाना आवश्यक है जिससे विद्यार्थी इससे सम्बन्धित ज्ञान का प्रायोगिक उपयोग कर सके । किसी भी तथ्य के ग्राफ को बनाने के लिए भी तालिका की आवश्यकता पड़ती है। तालिकाओं के आधार पर ही विद्यार्थी लाभ-हानि, वर्षानुसार प्रगति आदि की जानकारी आसानी से प्राप्त कर सकता है।

इस प्रकार वाणिज्य विषय की सहायक सामग्री में तालिका एक विशेष स्थान रखती **है।**

इन्टरनेट

आधुनिक समय में ज्ञान को प्राप्त करने का एक महत्वपूर्ण स्त्रोत इंटरनेट है। वाणिज्य क्षेत्र में ई-शॉपिंग, ई-मेल, इन्टरनेट न्यूज़ ग्रुप, ऑनलाईन बैंकिंग, ऑनलाईन संचरण सभी कार्य इन्टरनेट के द्वारा ही संभव हो पाते हैं। मुद्रण व समसामयिकता (updatability) के लिए भी इन्टरनेट का प्रयोग अति लाभकारी सिद्ध हुआ है। संसाधन आधारित अधिगम (Resource Based Learning), सामूहिक अधिगम के लिए इन्टरनेट का प्रयोग वाणिज्य विषय के अधिगम को विशेष रूप से प्रभावशाली बनाता है। इस प्रकार इन्टरनेट के द्वारा केवल अपने देश के ही नहीं अपितु दूसरे देशों की व्यवसायिक प्रवृतियों प्रबन्धों, टैक्सों, मौद्रिक नीतियों व आर्थिक ढाँचे का ज्ञान प्राप्त कर सकते हैं। अतः इन्टरनेट वाणिज्य विषय की शिक्षण-अधिगम सामग्री के रूप में एक अत्यन्त उपयोगी साधन है।

चार्ट

चार्ट वाणिज्य शास्त्र शिक्षण में प्रयोग की जाने वाली महत्त्वपूर्ण अनुदेशनात्मक सामग्री है। चार्ट एक साधारण समतल चित्र युक्त प्रदर्शन सामग्री है जो वाणिज्यिक सूचनाओं को प्रभावी ढंग से प्रदर्शित करने में विशेष रूप से महत्वपूर्ण सिद्ध हुआ है। कक्षा शिक्षण के प्रत्येक स्तर पर चाहे वह पूर्व ज्ञान परीक्षण या प्रस्तावना से सम्बन्धित हो या विषय-वस्तु के क्रमबद्ध प्रस्तुतीकरण से चार्ट अध्यापक को उसके कार्य में यथेष्ट सहायता प्रदान करते हैं। वाणिज्य शिक्षण में शाब्दिक या ग्राफिक सूचना प्रदान करने के लिए चार्ट महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। चार्ट का प्रयोग रेखाचित्र बनाने के लिए किया जाता है। जिसके अन्तर्गत किसी निगम या शहर की सरकार और व्यवसाय के संगठन को दर्शाया जाता है। संख्यात्मक व गुणात्मक दोनों प्रकार की सूचनाओं, तथ्यों तथा आंकडों को भली-भांति चित्रात्मक व ग्राफिक दृश्य सामग्री के रूप में चार्ट वाणिज्य शिक्षण की शिक्षण-अधिगम सामग्री में अपना विशेष स्थान रखते हैं।

निष्कर्ष

वाणिज्य शास्त्र के अध्ययन में अनुदेशानात्मक सामग्री ज्ञान को प्रभावी ढंग से प्रदान करने में सहायक सिद्ध हुई है। शिक्षण की गुणवत्ता में सुधार के लिए अनुदेशनात्मक सामग्री का प्रयोग विशेष रूप से लाभकारी है ताकि शिक्षण-अधिगम को अधिक प्रभावी, स्थायी तथा वास्तविक बनाया जा सके। वाणिज्य विषय को प्रभावशाली बनाने में चार्ट, तालिका, इन्टरनेट, कम्प्यूटर, बुलेटिंग बोर्ड आदि की अपनी एक विशेष भूमिका रही है। वाणिज्य विषय के शिक्षण-अधिगम के लिए आवश्यक अनुदेशनात्मक सामग्री विभिन्न शिक्षण परिस्थितियों में छात्रों व समूहों के मध्य प्रभावशाली ढंग से ज्ञान का संचार करती है। आधुनिक वैज्ञानिकता के दौर में समय के सी चलने के लिए अनुदेशनात्मक सामग्री का उचित एवं सामर्थ्य पूर्ण प्रयोग करना वाणिज्य विषय को रोचक व उपयोगी बनाता है। यह सामग्री विद्यार्थियों में तथ्यात्मक सूचनाओं को रोचक ढंग से प्रस्तुत करना व बालकों की अभिरूचि में भी आशानुकूल प्रभाव डालती है।

वाणिज्य शिक्षण के शिक्षण-अधिगम में अनुदेशनात्मक सामग्री क्रियागत अवसरों की सुलभता, अर्थपूर्ण अनुभव की प्राप्ति व वैज्ञानिक अभिवृति के विकास में सहायक होती है। जो अधिगम को स्थायी बनाती है तथा

* Assistant Professor, M.D. College of Education, Bahadurgarh,

यह सामग्री मनोवैज्ञानिक प्रदर्शन की प्रवृतियों केसिद्धान्तों को मध्यनजर रखते हुए विद्यार्थियों में आत्म-प्रकाशन के विशेष अवसर प्रदान करता है।

शिक्षा प्रक्रिया की गतिशीलता, नए वैज्ञानिक अनुसंधानों की आधुनिकता व नए परिवर्तनों को मध्यनजर रखते हुए अध्यापक सीमित समय में उद्देश्यों की प्राप्ति केवल अनुदेशानातमक सामग्री के कुशल प्रयोग के द्वारा ही कर सकता है। अतः शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया में अनुदेशनात्मक सामग्री अपनी एक महत्वपूर्ण भूमिका निर्वाह करती है।

सन्दर्भ सूचि

➤**NCERT, Audio-visual Hand Book.**

> Bhorali, D. Commerce Education in India.

> UGC,

Report of the Curriculum Development Centre in

Commerce.

> Bhall, C.L. Audio Visual Aids in Education.

-

> Rao Seema, Teaching of Commerce.

> Taiwo, A.A., Foundations of Classroom Teaching.

> Satlow, I.D., Teaching Business Subjects Effectively.

> Khan, M.S., Commerce Education.

> Mehra, V., Educational Technology.